कोविड काल में बदला समाज

प्रस्तावना : 21 के इस सदि में सभी राष्ट्रों की लक्ष्य सामाजिक और आर्थिक विकास पाना है। परंतु राष्ट्रों को उलजन में डालते हुए आया कोविड़ वैरस एक महामारी में तबदील हो गया जिसके कारण राष्ट्रों को इस लक्ष्य पहुँचने में समस्या झेलने पड़ी। इस महामारी ने जनता और सरकारों को तंत्र लेने में मज़बूर किया जिससे समाज में कोविड़ के द्वारा एक बदलाव आया। "हर एक गतिविधी को सामान्य और विपरीत गतिविधी वापस होगा" यह आईन्स्टीन का वाक्य है। यह ही हम आजके समाज में देख सकते है। महामारी

के कारण लिये गए उपाय समष्टि में स्वास्थ्य, शिक्षा, व्यवसाय आदि के क्षेत्रों में बदलाव लाया। जैसे एक सिक्के के दो पहलू होते है ठीक उसी प्रकार इस बदलाव में सकारात्मक और नकारात्मक वश है।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में :-

अगर नकारात्मिकता से देखे जाए, तो कोविड़ जनता के मानसिक और स्वास्थ्य में समस्याएँ लेकर आया। चीन में एक नया वैरस जन्म लेते समय से ही मानव के दिलों में भय और भीत बड़ गया। लॉकडॉन के समय घर में बंध बैठे लोगों को तनाव और मानसिक समस्याओं को झेलना पड़ा। एक रिपोर्ट जो विश्व स्वास्थ्य संगठन हाल में लोगों के स्वास्थ्य पर पड़कर निकला गया था

इसमें कहा गया था कि कोविड काल के कारण मानसिक प्रश्नों झेलने से आत्महत्या का संख्या बड़ी थी। कोविड से अपने पास के लोगों को नष्ट होने से कई लोग अकेलापन महसूस भी करने लगे। कोविड के बीमारी से बचने के बाद भी 'पोस्ट कोविड मुद्दों' आज भी कई लोगों को सता रहे हैं। घर में बैठने से और सिर्फ बैठकर खाने से लोग मोटा और आलसी बन गए हैं। यह कई जीवनशैली बीमारीयों का बढ़ने का कारण भी हो गया है। किंतु सकारात्मक आँखों से देखे जाए तो लोगों की प्रतिरक्षा प्रणाली में अच्छा बदलाव आया है। लोगों आज बीमारीयों से लड़ने की सही तरीका पता है। इसेंशियल डॉक्टरों की भूमिका भी लोगों को पता चला। कई डॉक्टरों ने अपने जीवन को न

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

सोचकर दूसरों की भलाई केलिए काम की।

"जग में रहकर कुछ काम करो
यह जन्म हुआ किस अर्थ हो
समझो जिसमें यह व्यर्थ न हो
कुछ तो उपयुक्त करो तन को
नर हो न निराश करो मन को
संभालों कि सुयोग न जाय चला"

यह मैथीलिशरण गुप्त जो हमारे राष्ट्र कवि है उनका वाक्य है। इसमें कहा गया है कि जब एक व्यक्ति अपने सबकुछ त्यागने केलिए तैयार होता है समाज के भलाई केलिए तब वह अनश्वर बन जाता है। ऐसे ही कई डॉक्टरों अनश्वर हुए है। लोग आज उन्हें 'हीरोस' कहा रहे है'। यह समाज में हुआ एक विशाल बदलाव था। और कई अस्पताल खुले और नई वैज्ञानिक वस्तुओं का उपयोग

भी शुरु हुआ इस क्षेत्र में। लोगों को सफाई और स्वच्छता का बोध भी हो गया है। खुले में शौच करना, थूकना यह सब कम हो गए हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में :-

देखे जाए तो स्वच्छता के बोध आने से आज कई स्कूल स्वच्छ हो गए हैं। लॉकडॉन के समय बच्चों ने अपना रचनात्मक वश बढाया। हाल में देखने को मिला खबरे में कि एक बच्चे ने 'रोबोट' बनाया क्या अपने लॉकडॉन के व्यर्थ समय में परंतु शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक से भी नकारात्मक चीज़ें हुए हैं। कई स्कूलों ने 'ऑनलैन क्लास' शुरु किये जिसके कारण बच्चों के हाथों में फॉन, या कट

Item Code: 645 Participant Code: 109

है कि 'सोशयल मिडिया' आये जिसको दुरुपयोग करने लगा बच्चो ने। क्लास देखने के बजाय वे वाटशाप, इन्स्ट्राग्राम आदि में उलझ गए। यह उनके मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव डाला। वे अन्य राज्यों और जनता में आकर्ष हो रहे है जब उन्हें पढ़ाई पर जोर डालना है। यह जाकर उनके उपरी पठन में बोझ सा खड़ा होगा। बच्चों में ~~हमे~~ आज बचपना नहीं, हमदर्दी नहीं, माँ-बाप से प्यार भी नहीं। वे आज लापरवाह हो चुका है। नशीली वस्तुओं के चंगूल में आज कई बच्चे फस चुके है। पब जी जैसे ओणलैन खेल में भी उलजकर बैठे बच्चों का भविष्य अब किस नरह होगा? यह देश की विकास में भी बोझ सा स्थान ले चुका है। प्यार, नशीली वस्तुओं

का उपयोग और बच्चों में आये सभी दुष परिनाम का कारण यह फॉन ही है।

व्यवसाय के क्षेत्र में :-

कपड़े से लेकर सब्जी तक आज सब 'ऑणलैन' द्वारा घर में मिल सकता है। यह कोविड़ काल में कई लोगों ने उपयोग करना शुरु किया क्योंकि वे घर के भीतर थे। इससे कई 'कंपनी' जैसे आमशोण, फ्लिकार्ट आदि को आय में बदलाव आया। परंतु व्यवसाय देखे जाए तो वह कोविड़ लोकडॉन समय धीमी हो गए। लोकडॉन से गाड़ीयाँ चलना रुका जिससे सामानों का चलना बंध हो गए थे कुछ समय तक जिससे कई लोगों को नौकरी नष्ठ हुए। आय कम हुआ।

प्रकृति पर :-

लॉकडॉन के वजह से गाडीयाँ चलना रुक गया जिससे प्रदूषण कम हुआ। वायु साफ हुए। यमुना में आसमान की झलक देखने को मिला। गंगा 40% 50% साफ हो गए। इस सबका प्रभाव भी समाज में भी आया। रिपोर्ट के मुताबिक वायू प्रदूषण से स्ट्रोक, फेफड़ों की कानसर आदि कम हो गए है। साफ प्रकृति मनुष्य के अंधर बदलाव भी लेकर आए। इन सब से लोगों को पता चला कि प्रदूषण से लड़ भी जा सकता है और इसको कम भी कर सकते। इससे प्रभावित आज कई लोगों और वैज्ञानिक इस पर पढ़ भी रहे है।

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

समाज में हिंसा :-

रिपोर्ट में कहा गया था कि भारत में लोकडॉन के समय बच्चों पर किये जाने वाला बलातकार, उत्पीड़न, और स्त्रियों से किए जाने वाला हिंसा, उत्पीड़न, पती से मार पीठ आदि के संख्या बड़ गई थीं। यह कोविड के बाद भी समाज में कई समस्याएँ लेकर आगया है। डिवोर्स के संख्या बड़ी। यह उन बच्चों के जीवन को प्रभावित किया। इससे बच्चे आम-तौर पर नशीली वस्तु, मोबैल फॉन आदि को दुरुपयोग करने लगा। सैबर कैम' भी बड़ा। यह सब आम जनता को उलझन पडाया है और देश के उन्नति केलिए भी समस्या है।

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

निष्कर्ष :-

कोविड़ समय ने कई बदलाव लेकर आये। यह समाज में सकारात्मक और नकारात्मक चीज़ें लेकर आये। परंतु सामाजिक प्रश्नों और नकारात्मक चीज़ों को कैसे हटाया जा सकता है इसके बारे में अब सोचना है। यह ही विकास लेकर आएगा। जैसे कबीर दास ने लिखी

"जड़ चेतन गुण दोषमयी
विश्व कीन्ह करतार
संत हंस गुणगहही मई
परिहरि वारि विकार"

अर्थात ईश्वर ने विश्व को गुण और दोष, जड़ और चेतन से बनाया है। जैसे हंस धुँध पीकर पानी को छोड़ते है वैसे ही मनुष्य को दुशीलों को छोड़कर अहिंसा और अच्छे शील अपनाकर

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

चलना है। जिससे ही विकास होगा। कोविड़ काल में हुए बदलाव का सही इस्तेमाल करना है। तब ही हमें एक अच्छा और स्वास्थ्य पूर्ण भविष्य मिलेगा।